R.N.I.-CHHHIN/2010/36256 वर्ष 7, अंक 25, जुलाई - सितंबर 2016 I.S.S.N.-2320-3455

राष्ट्रसेतु
RASHTRASETU

Peer Reviewed / Refereed
Research Journal in Hindi

भारतीय साहित्य एवं भाषा समन्वय की
पुरस्कृत और पंजीकृत शोध पत्रिका

Scanned with CamScanner

वर्ष 8 अंक 25, जुलाई -सितम्बर 2016 ISSN 2320-3455

अनुक्रम

- **साहित्य/शोध**
  - डॉ. प्रभात त्रिपाठी की कहानियों में परंपरा और आधुनिकता का समावेश / पूनम तिवारी 1-3
  - पाश्चात्य जगत में प्रेम, विवाह और संबंद्ध-विच्छेद/डॉ. सुप्रिया पी. 4-5
  - अस्तित्व संघर्ष और दलित नारी : सुनो शेफाली के विशेष संदर्भ में/ सुजिता पी. 6-7
  - स्त्री प्रतिरोध की चिनगारियाँ : प्रेमचन्द की कहानियों में / शहला के.पी. 8-10
  - प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के उपन्यासों में राजनैतिक चेतना / उमाकान्त गिरि 11-12
  - संत शिरोमणी मीरा के आत्मवृत्त में गुजरात / डॉ. गिरीश सोलंकी 13-15
  - नारी के संकल्प और संघर्ष का समन्वय इदन्नम / डॉ. कल्पना के बुद्धदेव 16-18
  - भूमण्डलीकृत क्रूरता का प्रतिरोध : कुमार अंबुज की लेखनी / मृदुला पी.एम. 19-21
  - स्त्री अस्मिता समकालीन स्त्री कविता में /विनीता टी.एन. 22-25
  - समकालीन कविता में बच्चों की बदलती दुनियाँ / बिन्सी पी. 26-29
  - बकरी : समकालीन जिन्दगी का दस्तावेज /डॉ. चन्द्रिका के. 30-31
  - गजल से यह गफलत क्यों / डॉ. मनु संस्कृति/शोध 32-34
  - लोकसंस्कृति का महत्व और कुबेरनाथ राय / डॉ. ज्योति दातीर 35-36
- **मीडिया / शोध :**
  - प्रश्नो के घेरे में चौथा स्तम्भ /डॉ. रामविनोद रे 37-39

छत्तीसगढ़ी / शोध :

- अधकचरा ज्ञान से लोग दिग्भमित / डॉ. विनय कुमारपाठ 40-42

शोधपत्र प्रकाशन हेतु संपर्क कीजिये

प्रिय शोधार्थियों **राष्ट्रसेतु** भारतीय-साहित्य एवं भाषा समन्वय की एक मात्र विश्वविद्यालयीन शोधपत्रिका है । यह बहुभाषी और समस्त शैक्षिक विषयक भी है । ISSN द्वारा रजिस्टर्ड इस त्रैमासिक पत्रिका में अपने शोधपत्र/शोध आलेख प्रकाशित करवाकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C.) की योजनाओं एवं सेवा नियमों का लाभ आसानी से प्राप्त कर सकते हैं ।

- प्रधान संपादक

छत्तीसगढ़ की वरिष्ठ कथा लेखिका

इन्दिरा राय का नया उपन्यास

बसेरा

रियायती मूल्य पर उपलब्ध

संपर्क : प्रधान संपादक, **राष्ट्रसेतु**

- प्रकाशक

Scanned with CamScanner

पाश्चात्य जगत में प्रेम, विवाह और संबंध-विच्छेद (हिन्दी उपन्यासों के संदर्भ में)

1 डॉ. सुप्रिया पी.

पाश्चात्य जीवन में अकेलापन, परायापन, रिक्ता, व्यर्थता आदि का बोध कुछ दशकों में विशेष उभरा है । मानवीय संबंधों में दरार आती जा रही है । संबंधों का विघटन समाज के सभी स्तरों पर दृष्टव्य है । मानवीय संबंधों के मूल में प्रेम जैसी कोमल भावनाएँ सूख गयी हैं । प्रेम वासनाजन्य मात्र हो गया है जिसमें न आत्मसमर्पण है, न आत्मदान और न ही लोकमंगल । प्रेम का एक सामाजिक पहलू होता है जो अनेक प्रकार के मूल्यों और दायित्वों से जुड़ा होता है जिसका लोप आज भौतिकता की चकाचौंध से हो रहा है ।

प्रभाकर माचवे के **तीस चालीस पचास** की उर्सुला प्रेम को दो शरीरों का लगाव मानती है जिसमें हृदय की भावनाओं को कोई स्थान नहीं । वह कहती है **प्रेम व्रेम क्या होता है । यह तो एक रासायनिक जैविक प्रतिक्रिया है । कुछ शरीर कुछ शरीरों को देखकर, निकट आने पर, एक-दूसरे से चिपटना चाहते हैं । यह शुद्ध पुद्गल व्यापार है । इसमें न तो कोई आत्मा है, न संस्कार । मन-वन तो बाद में जोड़ लिया गया है ।**[1]

नासिरा शर्मा के **सात नदियाँ एक समुन्दर** की तय्यबा प्रेम या इश्क को पूर्वनिश्चित अनुबंधन मानती

है । प्रेम जैसी भावना पर से उसका विश्वास उठा चुका है । यदि प्रेम होता तो तलाक, कत्ल, धोखा, आत्महत्या, बेवफाई सब मिट जाते । वह कहती है - **इश्क एक तयशुदा अनुबंधन का नाम है, जो कुछ समय बाद स्वयं ही टूटने लगता है । जिंदगी, वह भी आज के दौर की, किसी से जिंदगी-भर साथ रहने का पट्टा नहीं लिखवा सकती है ।**[2]

पश्चिम में विवाह की मान्यताओं में भी बदलाव आये हैं । विवाह परिवार का आधार है और परिवार समाज की प्रारंभिक इकाई है । वह प्रारंभिक इकाई आज शिथिल हो गयी है। विवाह-पूर्व सेक्स-संबंध अनैतिक न होकर सहज बात बनती जा रही है । यौनिक संबंधों में से सही गलत दूर हो गया है और निजी स्वतंत्रता ही सब कुछ बन गयी है ।

योगेश कुमार के **टूटते बिखरते लोग** का डेल विवाह रस्म को निरर्थक समझता है । डेल यह मानता है कि शादी के बाद स्त्री और पुरुष एक-दूसरे से अपनी अपेक्षाएँ पूरी होने की आशा बाँध लेते हैं और उनकी अपेक्षाएँ ऐसी भी हो सकी हैं जो दोनों में से किसी एक में स्वाभाविक उद्देश्यों के हित में न हों । इसलिए दो भिन्न व्यक्तियों का पति और पत्नी बनकर रहना उचित नहीं है । वह कहता है - **स्त्री और पुरुष की रचना संभवत: एक-दूसरे के लिए की गयी है, लेकिन वे एक-दूसरे से शादी करने के लिए नहीं बनाये गये ।**[3]

अमेरिका के विवाह दो तरह के हैं - स्माल मैरिज और बिग मैरिज । स्माल मैरिज में दुल्हा-दुलहिन, मेड्स ऑफ ब्राइड (Maids of bride)(और गॉड फादर (God father) के अलावा छ: और मेहमान आमंत्रित किये जाते हैं । लेकिन बिग मैरिज में मेहमानों की संख्या 12 या 15 तक पहुँच जाती है । भारतीय शादी में डेढ़ सौ-दो सौ मेहमान होते हैं, यह सुनकर टूटते बिखरते लोग की मिया कहती है - शादी दो आदमियों का निजी मामला होता है और इतने लोगों का होना शादी की खूबसूरती को खत्म कर देता है ।[4]

उषा प्रियवदा के **अन्तर्वंशी** की ग्रेस भी भारतीय विवाह व्यवस्था पर चकित है । एक अपरिचित से दो-तीन बार मिलकर शादी कर लेना उसके लिए मूर्खता है । बिना व्यक्ति

Scanned with CamScanner